## दिनांक 4 ति ग्म्बर, 1984

तं. को ति/सोनीपन/88-84/33333 - नूषि है जिला है साम तन हा लाग है है मैं महेश बुड प्रोडक्टस प्राप्त नि , खेबड़ा, बहानगड़ (सोनीपत) है अभि है हो अहं दि सिंह की उन्हें कि कि बेंग इसमें इसहै बार निश्चित मामन् में कोई श्रीसोमिक विनाद है :

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की त्यांय किया विर्णय हेल विदिष्ट करना बांछनीय, समझते हैं ;

इसलिए, श्रेब श्रीचोगिक विवाद श्रविनियम, 1947, में धारा 10 की उपधारा (1) ये खण्ड (ग) वारा प्रदाप्त की गई शिक्तियों का प्रयाग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के हारा सरकारी अधिगुलना सं. 9641-1-अम/70/32573, दिलांक 6 नवस्वर, 1970, के साथ पठित सरकारी अधिगुलना सं. 385 4-ए. एस. श्री. ई.-अम -70/13648, दिनांक 8 मई, 1970, हारा उक्त शृधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित अम न्यायालया, रोहता की मिलादास्ता या उससे सुमंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय निर्णय हेसु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उपत प्रवादारों तथा श्रीमि के बीज या से विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से गुगंगत या सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री प्रह्लांद सिंह को सेवाओं का समापन न्याहोचित तथा ठाव है ? यदि नहीं, तो दह किस सहत का हेकदार है ?

मं. थो. वि./सोनीपत/88-84/33840 -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं भहेश वुड प्रोडवटस प्रा० लिं०, जेवड़ा, बहालगढ़ (सोमीपत), के श्रमिक श्री किशोगी लाल तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई बीचोगिक विवाद है;

मोर चूंकि द्वरियाणा के राज्यपाल विवाद की प्रायितिश्रंग हेतु निर्दिस्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इस लिए, मन, मोबोणिक निवाद प्रशिविषत, 1947, को छारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रशान की गई. सिलायों का प्रयोग करते हुने, हरियाणा के राज्याल इसके द्वारा सरकारी मिधिनूचना सं 9641-1-श्रम/70/32573, दितांक 6 तकस्वर, 1970, के साथ पर्टित सरकारी मिधिनूचना सं 3854-ए.ए.ए.प्रायो ई.-थप-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उनत मिधिनयम की धारा 7 के भीक गिल्ला श्रम स्थायालय, रोहत्क, को विवाद प्रस्त या उससे सुकंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामना त्यायनिर्णय हैन निर्विष्ट करते हैं को कि उनत प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या उनत विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित नामला है:--

" स्था स्त्री किशोरी लाल की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो यह किस राहत का इकधार है?

सं. भो. वि/सोनीपत/88-84/33847---चृकि हिन्याणा के राज्यपाल की राय है कि मैं व तहेश बुड प्रोडक्टस प्रा० लि॰, भोवहा वहालगड़ा (सोनीपत), के श्रमिक श्री कचन प्रगाव तथा उसके प्रहाधकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित गामले में कोई मौद्योगिक विवाद है;

मीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाखनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रंब, ग्रौशोधिक विवाद श्रिक्षियम, 1947, की धारा 1,0 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रधान की गर्द गिक्तियों का प्रयोग करत हुए, हरियाणा के राज्यात इंस्के द्वारा संप्कारी श्रीधसूचना सं० 9641-1-श्रम/70/22573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, को साथ पंठित सरकारी श्रीक्षमूचना सं० 864-ए. एस. ग्रो. ई.-श्रम-70/13648, दिनांक 8 नई, 1970, द्वारो उक्त श्रिक्षियम की धारा 7 के श्रिक्षीन गठित १ म नगायाल , रोह्नक, को श्रिक्षायग्रस्त या रुसमें सुमंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय हित् निविध्य करते हैं जो कि उक्त प्रवक्तियोग तथा श्रीमक के बीच या ता विधादग्रस्त गामला है, या उक्त विधाद से सुसंगत या संबंधित मामला है:—

क्या श्री क्चन प्रसाद की सेवाओं का समार्गन नेपायीजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो बहु किस राहत का हक्तर है ?

सं भो. वि./सोनीपत/88-84/33854.--पृक्ति हरियाणा कें. राज्यपाल की राय है कि मैं पहेण बुड प्रोडक्टस प्रा० लिं , खबड़ा बहालगढ़ (सोनीपत), के श्रीमक श्री राम चिलीन तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई रीचोणिक विवाद है;

भौर पृंकि हरियाणा के राज्यपाल विशाद को त्यारिनिर्णय हेतु निर्दिश्द करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, मन, भोद्योगिक विवाद अधिनिद्या, 1917, की धारा 10 की उपमारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई जिल्लामें का मधीग करते हुने, हरियाणा के राज्यप कराते उपा गर्यकारी मधिन नना सं० 9641-1-अम/ 70/32573, दिनांक 6 नवम्बर 1970, के पास विविद्य सर्वार प्रियम की नवस्था के प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति के अधिनयम की मारा 7 के मुनीन मुनित अप स्थायालय, रोहाक, को निवाद प्रस्त पा उपसे सस्य प्रति तिवाद प्रस्त की निवाद प्रस्त की निवाद प्रस्त पा असे सम्य प्रित नीचे निवाद प्रस्त के वीच या तो विवाद प्रस्त सामजा है या उक्त विवाद से सुसंगत या समिनित सामजा है या उक्त विवाद से सुसंगत या समिनित सामजा है था उक्त विवाद से सुसंगत या समिनित सामजा है था उक्त विवाद से सुसंगत या समिनित सामजा है था उक्त विवाद से सुसंगत या

विश्वन की सेवाओं । समापन वायोगित तथा क्षेक है ? यदि मही, तो वह किस राहत का हकदार है ?

एस के महेण्यरी, सँयुक्त सचिव, हरियःणा सरकार, अस विभाग।

चिनांक 3 शितम्बर, 1984

्रीति भी विश्विति। 19 -84/55 508 देन वृक्ति हरियाणा के राज्यपाल को राय है कि में आरर्गनो स्वड् प्रा.लि., इण्डस्ट्रीयल र ऐरिया, सोनीपुत, के श्रीपक श्री शिव नाथ तथा उसके प्रवाहकों के बीच इसमें इसके बाद विखितामामले में कोई श्रीन्तोषिक विवाद

## और चकि हरियाणा के राष्यपाल विषय दाओं त्यायितायेग हेत् निर्विष्ट करना वाल्नीय समझने हैं:

्डिसलिए, अर्ब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों मान्यूयोग करते उसे हरियाणा के राज्यक्त इस के दारा परकारों अधिन्तात से 9641-1-अम/70/32573, दिनांक 6 नवन्तर, 1970, के साथ पठित तर कार्य प्रवास के 3664-ए एम औ (ई.)-70/1318, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उस्त अधि-तियम की मान्या क्या की विवादप्रकार या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मानवा त्याय-निर्णय हेत् निर्देश करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या उससे मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या अभिक की बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या उससे मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या

क्षित नाथ की सेवाओं का समापन न्याकृष्टित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

्रियों, के दें सुंद्री जिल्ली प्रित्री 194-8गी. 3516--चूंकि ह्यियाणा के राज्यपास की राय है कि मैं. मेटाकेंस इण्ड्स्ट्रीज खेवड़ा, रोड़, बहाल-पुढ़ा:सीनीपत्रके श्रीमक् श्री कोपाल सिंह तथा उसके प्रयत्मकों। के बीच इसमें इसके बाट लिखित मामले में कोई श्री बोगिक विवाद है;

मीर चुकि हुर्दियाणा के राज्यपाल विधाद को न्यायिनिर्णय हेतु निर्निष्द करना वांछनीय समझते हैं ;

हसंलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद श्रीधिनियम, 1947, की धारों 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की ग्रई शिक्तियों का प्रियोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा गरकारी श्रिधिस्चना से 9641—1—श्रम/70/32573, दिनांक 6 नैवम्बर, 1970, के साथ पेठित सरकारी श्रधिस्चन से 3864-ए एस ओ. (ई)-70/1348 दिनांव हमई, 1970 द्वारा उत्त श्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन पठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को कियादमन्त्र या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याया निर्णय हेतु निर्दिश्य करते हैं जो कि उवत प्रदासको तथा श्रीहरू, हो बीचाया,तो विद्यादमस्त मामला है या उनत विवाद से मसंगत या सम्बन्धित मीमला है :---

क्या श्री गोपाल सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का

में से शो विं सोनीपतं 194-84 33522 — चूंकि हरियाणा के राज्याल की राय है कि मैं. मेटाकेम इण्डस्ट्रीज, खेवड़ा रोड़, बहारीगढ़, सोनीपत, के श्रीमुद्द श्री राकेश कुमार भर्मा तथा उपके प्रवन्धकों के बोच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई खीद्योगिक विवाद है है कि स्टूर्ग स्वयं

क्रिकेट करना बांछनीय समझते हैं ;

EXPERIMENTAL PROPERTY.

ि कि कि प्रति । कि कि प्रति । विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई

ग साथों का प्रयोग करते हुने हुनेराएका के राज्यपात इस के द्वारा प्रश्चम् आधिम् ता सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 न सम्बद्ध 197), के पाल की प्रमानिक दिवन वा स्र 3 रह4-ए गायो (ई) 70/ 348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उनन अधिनयम को साथ 7 के अभीत पठित श्रम त्यायालक, रोहन को निकाद्यारत या उससे मुनगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-वित्र देन नार्केट करते हैं जो कि उन्त प्रक्थ में तथा श्रमिक हैं बोन्न श्रा थे, विवादक्षण मामला है या उन्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :---

वया और राकेण कृमार शर्मा की सेवायों का समापन न्यायांचित तथा ठील है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

मं. हो कि मो मेटाकेम इण्डरट्रीज, सेवड़ा रोड़, ज्यापनगर, सोनोपन, के श्रमिक श्री मुरा मल वर्मा तथा उसके प्रवन्धको के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीचोगिक विवाद

मार चिक हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्याय निर्णय होत् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

ध्यालिए, ग्रंथ, ग्रीहोगिक विवाद ग्रिधिन्यम 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई. अविवयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 9641—1-श्रुम/70/32573, दिनांक 6 निक्रपर 1970, मिर्मिज पटित सरकारी अधिमूचना सं 3854—ए पुनःग्री (ई)-70/1318, दिनांक 8 मई, 1970, हारा उक्त ग्रिधिन्यम भी आर 7 के ग्रंथीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रन्त या इससे सुगंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्मेश कि.वीच या तो विवादग्रस्त मामला है। या उक्त विवाद से सुसंगत या अस्वित्त मामला है। या उक्त विवाद से सुसंगत या अस्वित्त मामला है। या उक्त विवाद से सुसंगत या अस्वित्त मामला है। या उक्त विवाद से सुसंगत या अस्वित्त मामला है। या उक्त विवाद से सुसंगत या अस्वित्त मामला है। या उक्त विवाद से सुसंगत या अस्वित्त मामला है। या उक्त विवाद से सुसंगत या

क्या भं भूरा मल वर्माको सेयाक्रों का गमापन न्यायोचित तथा ठीक है 🗇 यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

ं प्रो कि कि में कि 186-8 433536.— चूंकि हरियाणा के राज्यवाल की राय है कि में अशोका विवेदर प्रा. लि., रोहतक, के अभिका की शास्ति स्वरूप तथा उसके प्रवस्थकों के रीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है : `

मोर विक हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायतिर्णय हेत् निर्दिप्ट करना वाछनीय समझत हैं;

्मिलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की विवाद का अधिन्य कर प्रदान की विवाद का प्रदान की अधिन्य का अधिन्य का प्रदान की अधिन्य का 1979, के साथ पठित सरकारी अधिन्य का सं 3864-ए.०स.ग्रो.(ई) 70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उसत अधिन्य का प्रारा । के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, की विवादयस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला व्यावित की निर्देश्य करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रत मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्रो णान्ति स्वकृषु की सेवाओं का समापन न्यायीचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

## दिनांक<sup>्</sup>। सिंतम्बर, 1984

मं आ जि|मोनीपत| 195-83|33:003.+ -चूंकि हिर्पाणों के राज्यात की गय है कि मै० एसके इण्टरनैशंनल एम-4, रेण्ड ट्रांसल एडिया गैनीप:, के अमिक श्री मंत्रालिया तथा एसके प्रवन्यकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई चौधांगिक किनाद है;

म्रोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विघ् द को न्यापनिर्णय हेतु निरिष्ट करना विछिनीय समझते हैं ;

इस लिए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की वर्षा 10 की उपवादा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का अयोग कन्ते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्टिसूचना सं. 9641—1-श्रम/70/32573, दिनांग 6 नंबंम्बर, 1970, के ताथ गंठन सरकारो श्रिष्टिसूचना सं. 3864-ए. एस. श्रो. (ई)- 10/1398, दिनांग 8 मई, 1970, द्वारा उक्त श्रिधिनियम की घारा प्रे के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उसके मुसंगत या उसके सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए विविष्ट दने हैं भी कि उक्त श्रवक्षकों तथा श्रमिक के बीन था तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से मुसंगत या सम्बन्धित मामला है :---

क्या आ। पंचालिया की सेवाओं का समापनं न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो बह किस राहत का हकदार है?